विकास की एक तस्वीर यह भी है

विज्ञान तथा तकनीक जीवन के कार्य व्यवहार में मददगार हैं। यह मदद हम किस तरह से लेते हैं या किस तरह के कामों में उनका उपयोग करते हैं, यह सब हमारी मूल्यानुगत समझ और परिवेशगत विकसित संस्कृति पर निर्भर है। मीडिया व्यक्ति और समाज के लिए इसी व्यवहार संस्कृति को प्रसंस्कृत करने में मदद कर सकता है। यह संस्कृति जीवन मूल्यों अथवा बाजार या उपभोग मूल्यों का संवर्धन, विकास या संस्कार करती है। इस परिप्रेक्ष्य में अपने आसपास विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों को देखें तो मीडिया की इस जरूरत का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। यह भी विवेचना की जा सकती है कि विज्ञान-तकनीक से विकसित किये साधन एवं उपकरण किस तरह के परिवेश मूल्यों का विकास कर रहे हैं। कुछ दो-तीन स्थितियों को प्रस्तुत करते हुए इस पर विमर्श करना कुछ स्पष्ट कर सकेगा।

सामाजिक कार्यों के विवेचक तथा संचारी अनिल सौमित्र ने भोपाल के पास के एक गांव जाटखेड़ी के बारे में दो व्यक्तियों के इसी तरह के व्यवहार का विवेचन किया है। स्मार्ट फोन का उपयोग हम मनोरंजन यथा सिनेमाई गीत, फिल्म आदि के लिए भी कर सकते हैं या फिर उसका नवाचारी उपयोग अपने हितों के लिए, अपनी आजीविका को बेहतर बनाने के लिए भी कर सकते हैं जैसे कि इस गांव के विक्रम ने किया है। इस संबंध में उनका लेख पूरे विवरण के साथ इस अंक में मौजूद है। उनका आशय है कि ज्यादातर लोग इस संचार सुविधा का उपयोग एक दूसरे की देखा-देखी में मनोरंजन या बतकही के लिए कर रहे हैं जबकि उसका सही और बेहतर उपयोग क्या हो सकता है इसे या तो वे जानते नहीं हैं, या उन्हें बताया नहीं गया है, अथवा उन्होंने अपने आसपास देखा नहीं है। यह बताना या इस बारे में उन्हें प्रशिक्षित करना इस सुविधा के बेहतर उपयोग के लिए जरूरी है।

सेमरी हरचंद, होशंगाबाद-पिपरिया मार्ग पर एक बड़ा गांव है जो अब कस्बे के रूप में विकसित हो रहा है। इससे 8 किलोमीटर दूर, नर्मदा नदी की ओर एक बहुत छोटा सा गांव ऊमरखेड़ी है जिसकी आबादी 300 के आसपास होगी। 15 मई को यहां दो बारातें देखीं। एक गांव से जाती हुई और उसी दिन एक, उस गांव में लौटकर आती हुई। दोनों बारातें कार तथा स्कार्पियो जैसे चौपहिया वाहनों से आई थीं। वर और वधु की वस्त्र सज्जा किसी भी नगर के आधुनिकों जैसी ही थी। उनके साथ के लोग विशेषकर युवा भी उसी आधुनिक सज्जा में थे। बारात की विदा या आगमन को स्मार्टफोन के कैमरे वीडियो या स्थिरचित्रों में कैद कर रहे थे। इन

कैमरों के माध्यम से यदि आप इन चित्रों को देखें तो उस गांव और वहां के शेष लोगों की तस्वीरों को बिल्कुल ही भिन्न पायेंगे। यहीं, उसी समय, गांव के पुरातन मठ पर कुछ लोग आज की ग्रामीण बदहाली पर चर्चा कर रहे थे। वे कह रहे थे कि हालात इतने खराब हैं कि विवाह या अन्य जरूरी कामों के लिए खेत आदि को लगभग आधे दामों में बेचने की स्थिति पैदा हो गई है। आठ-दस लाख रूपये एकड़ का खेत इन दिनों चार-पांच लाख में बेचने के लिए लोग तैयार हैं। एक तरफ यह स्थिति है और दूसरी तरफ आधुनिक संसाधनों जनित वह स्थिति है जो लौटती या काटती जैसे बारातें बता रही हैं ।

इस गांव में लगभग आधे लोगों के पास मोबाइल या स्मार्टफोन हैं। बच्चे और युवाओं के वस्त्रों में जीन्स और अन्य डिजाइन के वस्त्र हैं। जो उम्र दराज हैं, स्त्री या पुरूष, वे ही पारम्परिक वस्त्रों में हैं जिनकी दशा उनकी आर्थिक स्थिति का बयान करती है। एक किसान ने बताया कि उसने अपने खेत में दो-तीन लाख रुपये लगाये पर उत्पादित फसल की कीमत 37 हजार रूपये ही आई है। ऐसे हालात पिछले दो तीन बरसों से लगातार बने हुए हैं। लगातार कर्ज बढ़ता जा रहा है- बैंक का और व्यक्ति से लिया हुआ, जिस पर सूद चढ़ता जा रहा है। गांव में स्कूल है पर देखा-देखी और स्कूल की पढ़ाई के वातावरण के कारण दो से आठ किलोमीटर दूर महंगे निजी स्कूलों में बच्चों को भेजने का चलन बढ़ता जा रहा है। गांव में लगभग चालीस लोगों के पास बाइक या ट्रैक्टर या दोनों हैं। उनका उपयोग सेमरी आने-जाने में होता है। लगभग सभी घरों में बिजली का उजाला पहुंच गया है। चौथाई घरों में टीवी, कूलर और पंखे हैं। कुछ लोग अब यहां भी घरेलू गैस का उपयोग ईंधन के तौर पर कर रहे हैं। डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, कब्ज या कांस्टीपेशन जैसी बीमारियां भी अब यहाँ मैजूद हैं जिनके लिए अच्छा खासा पैसा लगाकर अपने को स्वस्थ बनाये रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। लगभग एक चौथाई मकान कांक्रीट के सहारे पक्के या पक्के जैसे हो गये हैं। गर्मियों के इन दिनों में भी दिन में वहां या तो लोग घरों में सो रहे थे या फिर पत्ते या चौपड़ के माध्यम से शाम का इंतजार कर रहे थे। इस छोटे से गांव में भी तीन दुकानें हैं जहां कस्बों में मिलने वाली वस्तुएं उपलब्ध हैं। लगभग दस घरों के लोग पूरे या आधे-अधूरे रूप में पास के कस्बे सेमरी या सोहागपुर अथवा होशंगाबाद जाकर बस गये हैं। इनके इस पलायन या स्थानांतरण को बाकी लोग अनुकरणीय दृष्टि से देखते हैं और ललक के साथ उनसे वहां की पूछताछ करते हैं।

सत्तर बरसों में विज्ञान, तकनीक, स्वराज्य आदि के सहारे विकास की यह तस्वीर ऊमरखेड़ी जैसे मैदानी इलाके के गांवों की है तो आदिवासी तथा अन्य पिछडे गांवों के हालात क्या होंगे, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। आधुनिक संचार सुविधायें तथा उपभोग की वस्तुओं को बाजार ने जिस सहजता और आसानी से पहुंचाया है उस तरह से लोगों की आजीविका के विकल्प, आर्थिक स्थिति के उपाय आदि न तो सरकार पहुंचा पाई है और न ही अन्य एजेंसियां इस बारे में लोगों को जागरूक या प्रशिक्षित कर सकीं हैं। इसी का परिणाम है कि

व्यर्थ, दिखाऊ, खर्चीले उपभोग के साधन, वस्तुएँ और मूल्य लोगों ने अपना लिए हैं या अपनाते जा रहे हैं और उसके दुष्चक्र में फंसकर अपना जीवन कठिन या व्यर्थ मानने लगे हैं।

ढोलक बनाकर बेचने वाले गांव जाटखेड़ी विकास की बाट जोहते उमरखेड़ी, जैसे गांवों के लिए मीडिया के पास संभवत: कोई समाचार, संदेश या विचार नहीं है। वह पूरी तरह से संभवत: इन स्थितियों का जानकार भी है, इसमें संदेह भी होता है। उसके पास सूचना संकलन का नेटवर्क तो है पर वह नेटवर्क किस तरह की सूचनायें संकलित करता है, किस तरह के विकास चित्र प्रस्तुत करता है, इसे किसी भी दिन के किसी भी समाचारपत्र या समाचार चैनल से जाना-समझा जा सकता है। इसका कारण यह भी है कि यह सब करने में उसकी आय का विकास होना उसे संदिग्ध लगता है। पंचायतों और पंचायत महाबलियों के द्वंद या उनकी प्रसिध्दि या सरकार के कामों की वकालत उसे अधिक लाभकारी प्रतीत होती है। गाहे-बगाहे एनजीओ या विकास कार्यकर्ता इस बारे में कुछ सूचनायें या विचार प्रस्तुत करते नजर तो आते हैं पर अब उस तरह के नवाचारी रूपांतरण के प्रयास कम ही देखे जाते हैं जैसे विक्रम के लिए किये जाने की सिफारिश अनिल सौमित्र ने अपने लेख में की है। क्या यह सब मीडिया को अपने हाशिए पर चली गई विकास वार्ता को फिर से मुख्य धारा की सामग्री बनाने की जरूरत नहीं अनुभव होती है, जिससे तस्वीर का यह पहलू भी लोगों के बीच आ सके और वे उन उत्तरदायी लोगों के बयानों पर विचार कर सकें जो तस्वीर को उजला बताने की कवायद में लगे हुए हैं।

****